(भरा लाल) की

वर्ष 2009 माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: +2 H. S. S. a.

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12-3-2009
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C,या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: ____ सेट: D

केन्द्र क्रमांक की सील

केन्द्र क्रमांक 131012

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	1	3	1	8	2	9	0

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को ...

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में × अंकों में ×

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 8 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम ________ पद ________

पता/संस्था ________

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

प्रश्न | पृष्ठ | प्राप्तांक

प्रश्न	प्राप्तांक
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
कुल प्राप्तांक	

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन के समय सही पाई गई हैं। होलाक्राफ्ट स्टीकर चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) — परीक्षक क्रमांक 17-20056

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) — दिनांक........

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक) — दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

B S P

प्रश्न नं-1

उ० (i) चाँद का मुँह टेढ़ा है गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना है।

(ii) आत्मकथा लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

(iii) शंकराचार्य ने ग्रन्थ शांकर की रचना ताड़ वृक्ष के नीचे की थी।

(iv) मनुष्य प्रेम-सदा बैकुंठी कवि जायसी का मानना है।

(v) सुरबाला को कपट होता है मनोहर की उद्दण्डता पर

प्रश्न नं-2

उ० (i) (अ) छायावाद

(ii) (ब) बालकृष्ण भट्ट

(iii) (ब) व्यंग्य

4

(iv) (क) ~~[illegible]~~ (ख) ~~[illegible]~~ नवगीत

~~(v)~~ (क) ~~[illegible]~~ की ~~[illegible]~~ क

(v) (क) जो भौतिक से अनभिज्ञ है।

प्रश्न नं-3

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

प्रश्न नं-4

(i) बाल लीला वात्सल्य के चितेरे है → सूरदास

(ii) व्यंग्य की प्रधानता → नयी कविता

(iii) पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द → वाक्य

B S F M I

योग पूर्व पृष्ठ

(iv) प्रताप पत्र → अन्य रचना

(v) मनोविकार का विवेचन → प्रश्न

प्रश्न नं-5

30 (i) डॉ. रामकुमार वर्मा की माताजी का नाम राजरानी देवी था।

30 (ii) प्रसाद जी ने पनघट अम्बर को कहा है।

30 (iii) अशुभ और विरोधसूचक रंग का नाम काला है।

(iv) बालकृष्ण शर्मा नवीन ने स्वाधीनता की रक्षा के लिए नवयुवकों का आह्वान किया है।

(v) वीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा है।

BSEMI

योग

प्रश्न नं-6 (अथवा)

30 उदयशंकर भट्ट द्वारा रचित नये मेहमान में महानगरों की आवास समस्या को उजागर करते हुए बताया है महानगरों में जनसंख्या अधिक होने के कारण मकान किरायों पर उठाने के उद्देश्य से छोटे - छोटे बनाए जाते है और मकानों में खिड़की और रोशनदान भी नहीं होते है जिससे गर्मीयों में मकान गर्म और सर्दीयों में ठंडे रहते है। जिससे मकान में रहने वालो को इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

प्रश्न नं-7

30

महाकाव्य	खण्डकाव्य
1.) महाकाव्य मे नायक के सम्पूर्ण जीवन का वर्णन होता है।	1.) खण्डकाव्य मे नायक के किसी एक खण्ड का वर्णन होता है।
2.) महाकाव्य मे	2.) खण्डकाव्य मे

कई सर्ग खण्ड काण्ड होते है।	सर्ग खण्ड काण्ड क्रम संख्या मे होते है।

महाकाव्य	रचनाकार का नाम
रामचरितमानस	तुलसीदास

खण्डकाव्य	रचनाकार का नाम
पंचवटी	मैथलीशरण गुप्त

प्रश्न नं - 9 (अथवा)

उ० नदी समाज का प्रतीक है और द्वीप व्यक्ति का प्रतीक है जिस प्रकार नदी द्वीप के किनारो को काट छांटकर के उसे स्वरूप प्रदान करती है ठीक उसी प्रकार जब बालक कुसंगति मे पड़ जाता है जो समाज (नदी) उसकी बुराईयो को काट-छांटकर उसे एक नया स्वरूप प्रदान करता है। समाज व्यक्ति को संस्कारवान बनाकर उसे आदर्श वाला बनाता है और समाज मे रहने के योग्य बनाता है इस प्रकार हम कह सकते

है कि भाषा स्वरूप को स्वरूप प्रदान करती है और समाज व्यक्ति को स्वरूप प्रदान करता है।

प्रश्न नं-10

उ० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार कवि और लेखक गद्य की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है।

हिन्दी निबन्ध साहित्य को चार वर्गों मे विभाजित किया गया है जो निम्नलिखित है।

1) वर्णनात्मक
2) विचारात्मक
3) भावनात्मक
4) विवेचनात्मक

B S E M

प्रश्न नं-12 (अथवा)

उ० कवित्त छन्द →
कवित्त छन्द मे 16 और 15 के विराम से कुल 31 वर्ण होते है।

उदाहरण →
सिसिर मे शशि को सरूप पावे सविताऊ
घाम हू मे चाँदनी की द्युति दमकती है
सेनापति होत शीतलता है सहसगुनी।
रजनी की झाई वासर मे झलकती है।

B
I
M
P

प्रश्न नं-13

उ० (अ) विभाषा →
विभाषा बोली का कुछ विकसित प्रारूप है जो कुछ क्षेत्रो मे बोली जाती है।

विभाषा की विशेषताऐ →
विभाषा की विशेषताऐ निम्नलिखित है।
(1.) जब बोली किन्ही कारणो से महत्व

को प्राप्त करती है तो उसे भाषा कहते है।

(2.) विभाषा क्षेत्र सिमित मे बोली जाती है।

(3.) विभाषा मे साहित्य नही होता है।

(ख)

(i) क्या सत्य की सदा जीत होती है?

(ii) यह काम नही कीजिए।

प्रश्न नं - 14

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

(क) रचनाऐ →
परिमल, अनामिका, कुकुरमुत्ता

(ख) भावपक्ष-कलापक्ष →
सूर्यकान्त त्रिपाठी जी की भाषा मे प्राकृति का चित्रण मिलता है इन्होने नारी के

BSEMP

30

प्रति सम्मान के बारे मे लिखा है निराला जी प्रकृति का चित्रण बना ही सौन्दर्य और मनमोहक किया है। निराला जी ने अपनी भाषा को सरल रूप प्रदान करने के लिए रूपक उत्प्रेक्षा आदि अलंकारो और रसो का उपयोग किया है। निराला जी ने अपनी भाषा मे पूंजीपतियो का विरोध किया है निराला जी की भाषा मे कही कही कठिन शब्दो का भी प्रयोग मिलता है। निराला जी की भाषा बहुत ही सरल और सुबोध है इन्होने जो भी कुछ लिखा है बहुत ही अच्छा लिखा है।

"अबे सुन बे गुलाब"

इस कविता मे निराला जी ने पूंजीपतियो के बारे मे बताया है कि कैसे वे मजदूर वर्ग पर अत्याचार करते है।

ग) साहित्य मे स्थान →

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी का साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान है ये छायावाद के कवि माने जाते है ये मुक्तक के ~~कवि~~ जनक है। ये मुक्तक रचनाकार कवि है हिन्दी साहित्य इनका ऋणी रहेगा।

पृष्ठ के अंको का योग

BSEMP

यो पृष्ठ के अंक कुल अंक

प्रश्न नं - 15

रघुवीर सिंह

(क) रचनाऐ ->

सप्तदीप, शिखरेखुल

(ख) भाषा-शैली ->

डॉ. रघुवीर सिंह जी की भाषा मे संस्कृत शब्दो का प्रयोग किया है आपकी भाषा मे मुहावरो का प्रयोग भी कही कही मिलता है। आपने उर्दू के तत्सम शब्दो का भी प्रयोग किया है। डॉ. रघुवीर सिंह जी की भाषा सरल सुबोध है।

डॉ. रघुवीर सिंह जी ने अपनी भाषा मे भावात्मक विचारात्मक और सूत्रात्मक शैलीयो का प्रयोग किया है रघुवीर सिंह जी हिन्दी साहित्य के निबन्धकार के रूप मे जाने जाते है। रघुवीर सिंह जी की भाषा खडी बोली है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ

प्रश्न न - 16

30 संकेत →

है प्रभु .... को लिए जाऊँगा।

संदर्भ →

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के तात्या टोपे नामक पाठ से लिया गया है इसके लेखक सुरेश शुक्ल चन्द्र जी है।

प्रसंग →

इस गद्यांश मे लेखक ने तात्या टोपे के बारे मे बताया है जब वे गुप्त स्थान मे रहते है और तात्या कहते है कि पहले मे अपने और अब देश के लिए जीऊँगा।

व्याख्या →

तात्या टोपे कहते है कि हे भगवान मुझे शक्ति दो जिससे मै उस वीर का बदला ले सकूँ जो मेरे स्थान पर शहीद हुआ है अब मुझे फिर से रणचण्डी का आह्वान करना है और अपने आप को गुप्त स्थान पर

रखते हुए उस अमर आत्मा को शान्ति प्रदान करनी है। अतः जब तक बदला नहीं चुका दूगा तब तक मै सन्यासी वेश मे ही रहूंगा और जीवन भर दुःखो को ही वरण करते हुए गुरुतर कार्य को निभाऊंगा। पहले मै अपने लिए जीता रहा हूं और अब उसके और देश के लिए जीऊंगा।

विशेष →

इस गद्यांश मे विशेष निम्न है।

(1) वीर रस का प्रयोग है।

(2) भाषा सरल है।

(3) इसमे तात्या टोपे के बारे मे बताया गया है।

(4) उस व्यक्ति के बारे मे बताया है जो तात्या के स्थान पर शहीद हुआ है।

B S E M P

पृष्ठ के १ योग

प्रश्न न-17

30 संकेत →

लानी जगरानी .... नई-नई

संदर्भ →

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी के सरस्वती वन्दना नामक पाठ से लिया गया है इसके रचयिता श्री रीतिमुक्त कवि केशवदास जी है।

प्रसंग →

इस पद्यांश मे जगत रानी सरस्वती की दया के वर्णन के बारे मे बताया है। जो किसी ने भी नही कर पाई।

व्याख्या →

जगत वन्दनी जगत रानी सरस्वती की उदारता का वर्णन किया जाए। ऐसा कोई भी नही है जो उनकी दया का वर्णन कर सके देवता, प्रसिद्ध सिद्ध रिषिराज, तपस्वी, ये सब उनकी उदारता का वर्णन कर करके हार चुके है फिर भी नही कर पाये। भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने वालो ने भी बखान किया लेकिन

पृष्ठ 16 का अंक   कुल अंक

नही पर पाते कुशलदास जी
कहते है पति बाहा पुत्र शिव
और नाती कार्तिकेय में भी
उनकी दया का वर्णन किया
और हर बार उसमे नये-नये
~~स्वरूप~~ परिवर्तन दिखाई दिये।

विशेष →
(1.) रसो का प्रयोग है।
(2.) प्रगत वन्दनीया सरस्वती के बारे मे बताया है।
(3.) ब्रज भाषा का प्रयोग है। आदि।

प्रश्न नं-8

उ० कवि शिवमंगल सिंह सुमन के
अनुसार विश्व तभी झुकता है
जब देश के युवा साहस
हद साहस से आगे विजय
गीत गाते चले जाते है और
अपनी प्रतिकूल परिस्थितियो को
अपने अनुकूल बना लेते है
और देश की स्वाधीनता की रक्षा
के लिए प्राणो तक की बाजी

माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश

लगा। देते है। उसे झुकाने की सामर्थ्य नवयुवकों की है जो अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा देते है और विजय से भाँवर भरते है।

प्रश्न नं. 11 (अथवा)

30 नैनो मेटेरियल से नैनो डोमेन का निर्माण होता है नैनो डोमेन एक पॅरमाणु हजारवे हिस्से के बराबर होता है इसकी विशेषताओं मे मेटेरियल इलेक्ट्रिनिकल आप्टल आदि है।

नैनो डोमेन को हीरे से बेडकसेतपा लोड से हीरे [illegible] करने से नैनो डोमेन की निर्माण की क्रिया सम्पन्न होती है।

BSE

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न नं-18

श्रीमान,
पुलिस अधीक्षक,
महोदय,
स्नेह नगर कॉलोनी ब्लार,
~~भिण्ड~~ जिला (भिण्ड म.प्र.

विषय →
मुहल्ले मे चोरी की घटनाओ से अवगत कराना।

महोदय,
सेवा मे नम्र निवेदन है कि स्नेह नगर कॉलोनी के समीप एक विस्तृत कॉलोनी है जहाँ किसी के आने जाने तक का भी पता नही चलता है और ऐसे मे शाम के समय दो चोरे बिजली की कटोती चोरो के आगमन की सूचना देती है दिन प्रतिदिन इस तरह चोरी की घटनाओ की वृद्धि होने से यहाँ के निवासी बहुत परेशान है। इसलिए आपसे निवेदन है कि पुलिस गश्त बढ़ाये

B S E M P

और चोरी की घटनाओं की वृद्धि रोके तो आपकी अति कृपा होगी

सधन्यवाद

भवदीय
प्रभा श्रीवास्तव
29131890

दिनांक
12/03/09

प्रश्न नं - 20

कम्प्यूटर : आज की आवश्यकता

रूपरेखा ->

(1) प्रस्तावना
(2.) कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति
(3.) कम्प्यूटर का आविष्कार और इतिहास
(4.) कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न क्षेत्रो मे
(i) शिक्षा के क्षेत्र मे
(ii) बैंकिंग मे
(iii) डिजाइनो मे
(iv) उद्योगो मे
(v.) कृषि मे
(5.) नेनो टेक्नोलोजी द्वारा कम्प्यूटर का आविष्कार
(6.) कम्प्यूटर की आवश्यकता
(7.) हानि
(8.) उपसंहार

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

किसमे इतनी शक्ति है, जो मेरे साथ चल सके
गति भी जिसकी पवन से, जो मुझसे होड़ कर सके।

(1) प्रस्तावना →
आज कम्प्यूटर का युग है जिसमे कम्प्यूटर की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है आज कम्प्यूटर ने हर क्षेत्र मे कमाल दिखाया है कम्प्यूटर आज मनुष्य की प्रथम और अन्तिम आवश्यकता हो गया है।

(2) कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति →
कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी के कम्प्यूट शब्द से हुई है।

(3) कम्प्यूटर का आविष्कार →
प्राचीन समय मे गणितिय गणनाओं को करने के लिए 'अबेकस' नामक यन्त्र था। फ्रांस मे एक वैज्ञानिक ने सन् 1683 ई. मे किया था और ब्लेज पॉसकल

चार्ल्स बैबेज ने सन् 1833 ई. मे इसके निर्माण की क्रिया सम्पन्न की

(4) कम्प्यूटर का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों मे →

(i) शिक्षा के क्षेत्र मे →
आज कम्प्यूटर के द्वारा शिक्षा सरल हो गई है कम्प्यूटर से हजारो सवाल त्रुटिरहित शीघ्र ही हो जाते है।

(ii) बैंकिंग में →
बैंको मे कम्प्यूटर का उपयो खाता बनाने रुपये जमा करने, और निकालने में किया जाता है।

(iii) डिजाइनो मे →
कम्प्यूटर के द्वारा विभिन्न प्रकार की डिजाइने बनाई जाती है जो देखने मे बहुत सुन्दर दिखाई देती है।

(iv) उद्योगो मे →
उद्योगो मे कम्प्यूटर का काम अधिक मात्रा मे किया जाता है।

(v) कृषि मे →
कृषि के क्षेत्र मे कृषक

B S E M P

पृष्ठ के अंको का योग

घर पर ही बैठे कृषि के बारे मे सभी सुविधाऐ प्राप्त कर सकते है।

(5) नैनो टेक्नोलोजी द्वारा कम्प्यूटर का अविष्कार →

कम्प्यूटर का नाम लेते ही मस्तिष्क पटल पर एक बनाभिकार आकृति आ जाती है औ पहले कम्प्यूटर का आकार बड़ा और क्षमता कम थी और नैनो टेक्नोलोजी के प्रयोग से जहाँ कम्प्यूटर का आकार छोटा हुआ है और उसकी क्षमताऐ भी बढ़ गई है इस प्रकार नैनो टेक्नोलोजी ने कम्प्यूटर का अविष्कार किया है।

(6) कम्प्यूटर की आवश्यकता →

आज कम्प्यूटर की आवश्यकता इतनी अधिक हो गई है कि उसके बिना कोई भी कार्य सम्पन्न ही नही किया जा सकता है कम्प्यूटर ने मानव जीवन मे अपनी एक नई जगह बना ली है जिसके बिना मानव अब कल्पना भी

BSEMP

नही कर सकता है।

हानि ->

विज्ञान मे हर चीज उपलब्ध की जिससे सभी प्रकार के लाभ नही हो सकते है उसी प्रकार कम्प्यूटर से भी हानि होती है एक कम्प्यूटर से बैंको मे चोरी आसानी से हो जाती है।

उपसंहार ->

कम्प्यूटर का उपयोग यदि इस प्रकार ही किया जाता रहा तो प्रत्येक घर मे टी.वी. वी.सी. आर की तरह कम्प्यूटर भी प्रत्येक घर मे होगा और भविष्य मे कम्प्यूटर के द्वारा ही वार्तालाप होगी।
हमे कम्प्यूटर का कम उपयोग मे लाना चाहिए जिस हम बुद्धि बने रहे और हमे कम्प्यूटर का गुलाम न बनकर उसको अपना गुलाम बनाना है।

कहा गया है—

विज्ञान द्वारा कम्प्यूटर दिया हुआ उपहार है।
हमे इसका गुलाम न बनकर इसको गुलाम बनाना है।

E S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न नं-७

उ० (i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक शिक्षा है।

(ii) सारांश→

संस्कार ही शिक्षा है। शिक्षा ही इंसान को इन्सान बनाती है। आज का जो युग है वह भौतिकतावादी युग है इसमे शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सुख पाना रह गया है। अंग्रेजो ने भी इसी शिक्षा से देश मे शासन व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए ऐसी शिक्षा को उपयुक्त समझा। आज के इस परिवेश मे यह आवश्यक है कि इन दोषो को दूर किया जाये अन्यथा यह दोष सुरसा के समान हमारे समाज को निगल जायेगा।

(iii) आज के इस भौतिकवादी युग मे सुख पाना अंग्रेजी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग